बेस्ट प्रेक्टिस – 1

विषय (अभ्यास का शीर्षक) :– मेरा गांव मेरा कृषि मेरा विकास .

पंचवर्षीय योजना हेतु प्रस्तावित 2023 – 2027

असल में किसी भी देश के मानव संसाधन को उत्पादक बनाने में युवाओं का बड़ा योगदान रहा है। कुल जनसंख्या में युवाओं का प्रतिनिधित्व जितना ज़्यादा होता है समाज उतना ही ज़्यादा तरक्की की राह पर रफ़्तार भरता है क्योंकि समाज का सबसे सक्रिय और क्षमतावान वर्ग युवाओं का होता है। युवाओं की आत्मनिर्भरता का सीधा संबंध देश की खुशहाली से है। यदि एक युवा गलत रास्ता अपना ले तो वह सम्पूर्ण समाज के लिए समस्या बन जाता है। इसलिए युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षाए उम्दा कौशल और टिकाऊ रोजगार देना समय की माँग बन गई है। कृषि एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें रोजगार की कोई कमी नहीं है और जहाँ युवा अपने नवाचार के द्वारा न केवल अपना भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं बल्कि देश की दशा और दिशा भी तय कर सकते हैं।

उद्देश्य –

"हमारे भगोल विषय का सरोकार प्रत्यक्ष रूप से ग्रामीण कृषि अर्थ–व्यवस्था एवं सामाजिक क्षेत्र से है एवं महाविद्यालय के 99 प्रतिशत विद्यार्थी इसी पृष्ठ भूमि से आते हैं। चूंकि महाविद्यालय पाठ्यक्रम का सीधा लक्ष्य सतत् कृषि एवं विकास से जुड़ा है। इस जुड़ा को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए भूगोल विभाग एक नया स्लोगन लेकर आया है। मेरा गांव मेरी कृषि मेरा विकास। महाविद्यालय के एम. ए. भूगोल के विद्यार्थियों द्वारा लघु शोध प्रबंध हेतु कुछ प्रमुख गांव का सामाजिक, आर्थिक सर्वेक्षण हेतु चयन किया गया है। इस लघु शोध से विद्यार्थी सर्वेक्षित गांव की समस्या एवं विकास के माध्यम से जुड़ाव का अनुभव करते हैं, हमारे सम्पूर्ण महाविद्यालय द्वारा इसे एक कार्यक्रम के रूप में भी विकसित किया जा रहा है जिसके माध्यम से हम लक्षित परिवारों को कृषि विकास से संबंधित अद्यतन जानकारी जागरूक्ता रैली, कृषि शिक्षा एवं नवाचार इत्यादि कार्यक्रमों के माध्यम से विकासात्मक कार्य किया जायेगा।"

मेरा गांव मेरा कृषि विकास **कार्यक्रम** के अंतर्गत श्री कुलेश्वर महादेव शास. महाविद्यालय गोबरा नवापारा के छात्र–छात्राओं द्वारा कृषि विकास ग्राम दुलना , छांटा , नवागांव ,बुड़ेनी गांव में कृषि विकास के सर्वागींण विकास हेतु विभिन्न कार्यक्रमों के लिए चयनित किया गया **चयनित** गांवों में देखी गई सामान्य समस्याएं खराब स्वच्छता सुविधाएं गर्मियों के दौरान पानी की कमी बिचौलियों और जंगली जानवरों के हमले के कारण गैर-कृषि गतिविधियों में कम पारिश्रमिक हैं। कृषि संबंधी समस्याएं धान में कीट और रोग की कटाई में कठिनाई कृषि इनपुट और कृषक के अनुकूल प्रौद्योगिकियों की अनुपलब्धता आदि हैं। आगे विस्तृत सर्वेक्षण और उसका संकलन प्रगति पर है।

कार्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप चयनित गांव के लिए नियोजित गतिविधियाँ इस प्रकार हैं:

- मेरा गांव मेरा कृषि मेरा विकास और अन्य विकासात्मक कार्यक्रमों जैसे स्वच्छ भारत अभियान कृषि विकास योजनाओं आदि के बारे में ग्रामीणों को जागरूक करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम
- चयनित गांवों के कृषक परिवारों का डेटाबेस विकसित करना

- समूहों में महिला किसानों और युवाओं को संगठन करना
- किसानों को जैविक कृषि हेतु प्रोसाहित करना।
- बागवानी कृषि हेतु महिला कृषकों को प्रशिक्षण देना।
- कृषि शिक्षा का प्रसार।
- महिलाओं के अनुकूल कृषि उपकरणों और प्रौद्योगिकियों का प्रसार
- मेरा गांव मेरी कृषि मेरा विकास पहल को बनाए रखने के लिए उपयुक्त तंत्र का विकास

सर्वेक्षण हेतु चयनित ग्राम

क्रं.	ग्राम / ब्लॉक / जिला	जनसंख्या	साक्षरता	कुल परिवार
1	दुलना	2481	60.42%	472
2	कठौली	1771	75.99%	376
3	छांटा	1356	65.71%	270
4	सकरी	1622	69.42%	315

कार्यक्रम योजना की रूपरेखा –

व्यापारिक कृषि प्रशिक्षण का आयोजन

आसपास गौर करें तो रायपुर से नवागांव के बीच में मालूम पड़ेगा कि फल-फूलों की खेती, मशरूम की खेती, पशुपालन एवं दुग्ध उत्पादन, मिल्क प्रोडक्ट तैयार करना, क्राफ्टेड फल के पौधे तैयार करना, खाद-बीज की दुकान लगाना, कुक्कुटपालन, पालन, सजावटी पौधों की नर्सरी खोलना, खाद्य प्रसंस्करण और आँवला, तिलहन, दलहन की प्रोसेसिंग यूनिट लगाना युवा पीढ़ी को खूब भा रहा है। इस ओर युवाओं का रुझान बढ़ा है। कोरोना के बाद गाँवों में ही रोजगार की ओर आकर्षण का बढ़ रहा है, चयनित ग्रामों में व्यापारिक कृषि प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्रों द्वारा ग्रामिणों के लिए आयोजित किया गया है जिसमें ग्रामीण प्रोसाहित हुए। देश और अर्थव्यवस्था के लिए शुभ संकेत है। वैज्ञानिक पद्धति से कॉलेज स्तर पर ग्रामीण कृषकों को प्रशिक्षण दिया गया, कुटीर एवं कृषि आधारित घरेलू उद्योगों को बढ़ावा मिले तो पैसे की चाहत में युवा वर्ग भी खेती की ओर उत्साह के साथ रुख करेंगे।

ग्रामीणों में कृषि नवाचार का विकास

“लाल बहादुर शास्त्री ने कहा था जय जवान, जय किसान। उसके बाद अटल बिहारी वाजपेयी ने जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान का नारा बुलंद किया था। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान।” यानी कृषि क्षेत्र में भी अनुसंधान बहुत ज़रूरी है। युवाओं को कृषि से जोड़ने के लिए वर्तमान में देशभर में कृषि विश्वविद्यालय प्रयासरत हैं। जहाँ कृषि की पढ़ाई गुणवत्तापूर्ण तरीके से हो रही है। भारत का इजरायल के साथ कृषि शोध को लेकर करार हुआ है। अंतरिक्ष विज्ञान, नैनो टेक्नोलॉजी, जेनेटिक्स, आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस, इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी और अन्य क्षेत्रों से जुड़े वैज्ञानिकों को यदि एक प्लेटफॉर्म पर लाया जाए तो कृषि क्षेत्र के लिये बेहतरीन शोध हो सकते हैं। चयनित ग्राम में कृषक वर्ग को उन्नत कृषि के विकास हेतु कृषि नवाचार से जोडनें हेतु पंचवर्षी योजना तैयार कि गयी है। जिससे कृषि के तकनीकीकरण, बाजारीकरण, डिजिटलीकरण और औद्योगिकरण को बल मिलेगा। और युवाओं को कृषि से जुड़ाव महसूस होगा।

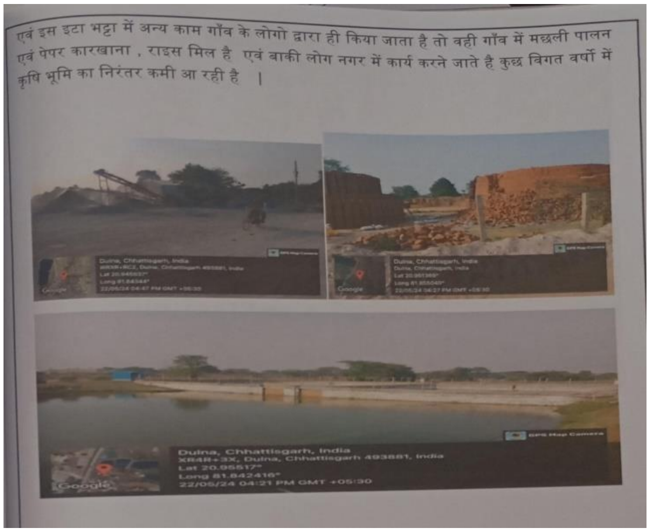
एवं इस इटा भट्टा में अन्य काम गाँव के लोगो द्वारा ही किया जाता है तो वही गाँव में मछली पालन एवं पेपर कारखाना , राइस मिल है एवं बाकी लोग नगर में कार्य करने जाते है कुछ विगत वर्षो में कृषि भूमि का निरंतर कमी आ रही है ।

कृषि शिक्षा का विकास

यदि किसान पढ़े-लिखे हो तो मौसम, मिट्टी, जलवायु, बीज, उर्वरक, कीटनाशक और सिंचाई से संबंधित सटीक जानकारी रखेंगे। फसलों को सही दाम कैसे मिले, कोल्ड स्टोरेज में फलों और सब्जियों को सुरक्षित कैसे रखा जाए और कृषि से प्राप्त कच्चे माल का निर्यात संबंधी गतिविधियों के बारे में ख़बर युवा किसान भलीभांति रखते हैं। जिससे ज़्यादा लाभ मिलने की संभावना बढ़ जाती है। दरअसल अब कृषि कार्य भी आधुनिक हो गया है। "एक जागरूक, शिक्षित, कर्मठ और दूरदर्शी किसान ही अपने खेत का सदुपयोग कर सकते हैं। फसलों की पैदावार और गुणवत्ता का कनेक्शन किसानों के मस्तिष्क से होता है।" निर्णय लेने की अच्छी क्षमता, विपरीत परिस्थियों में भी संयमता न खोना, फसल बीमा की सही जानकारी, कृषि ऋण की प्रक्रिया से अवगत होना, मजदूरों से समानुभूति बनाए रखना और बाजार के अनुकूल कल्पना करना; ये कुछ ऐसे गुण हैं जो युवा किसानों में कमोबेश पाए ही जाते हैं। जिससे कृषि कार्य रचनात्मक और आसान लगने लगता है। विकसित देशों में युवा दशकों से खेती-किसानी कर रहे हैं, और लगातार मानक स्थापित करते आ रहे हैं।

क़ायदे से पढ़ा भारतीय युवा फूड प्रोसेसिंग, वेल्यू एडिशन, टेक्नोलॉजी और मार्केटिंग को भलीभांति जानते हैं। गाँव में ही प्रोसेसिंग हो, गाँव में ही पैकेजिंग हो और वहीं से सीधे बाजार तक सामान पहुँचे तो युवाओं को खेती-किसानी से कोई परहेज न होगा। आजकल तो कई युवा किसान ऐसे हैं जिनका अंतर्राष्ट्रीय बाजार में लिंक स्थापित हो गया है और वे ठीक-ठाक लाभ कमा रहे हैं। अधिक से अधिक युवा कृषि कार्य से जुड़ें इसके लिए भागीरथ प्रयास की आवश्कता है। क्योंकि “हमारे सामने यह चुनौती है कि किसानों की अगली पीढ़ी कैसे तैयार हो। अगर युवा इसमें नहीं आएंगे तो हम किसान कहाँ से लाएंगे।” देश के नीति निर्धारणकर्ताओं के सामने चुनौती है कि ऐसी नीतियाँ बनाएँ कि गाँवों में युवा रह सके और खेती-किसानी कर सके। इससे युवाओं के साथ-साथ भारत का भी उद्धार होगा। तब बेरोजगारी का समाधान यूँ ही हो जाएगा। “कृषि में युवाओं के आने से युवा आत्मनिर्भर होंगे, युवाओं के आत्मनिर्भर होने से देश आत्मनिर्भर होगा। अंततोगत्वा राष्ट्र का कल्याण होगा।”

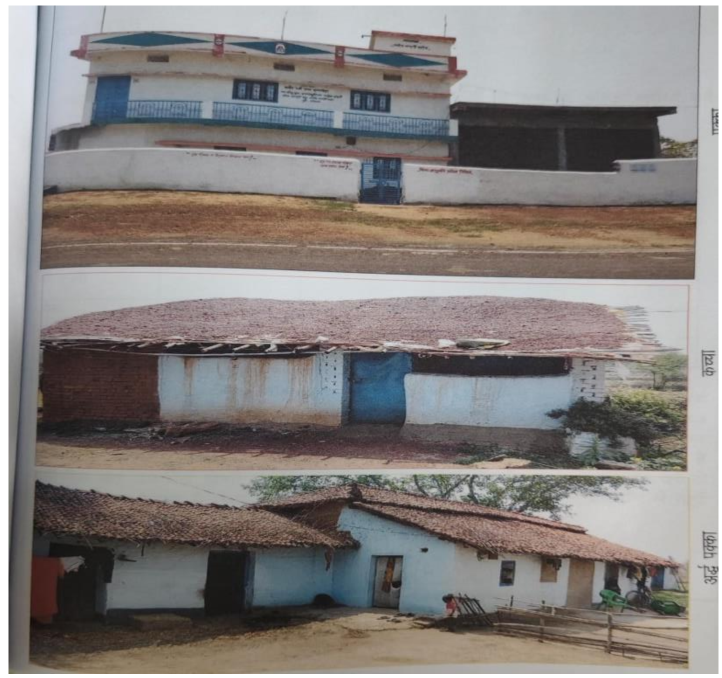

चर्चा के बाद में, टीम ने महानदी नदी के किनारे निम्नलिखित गांवों का दौरा किया

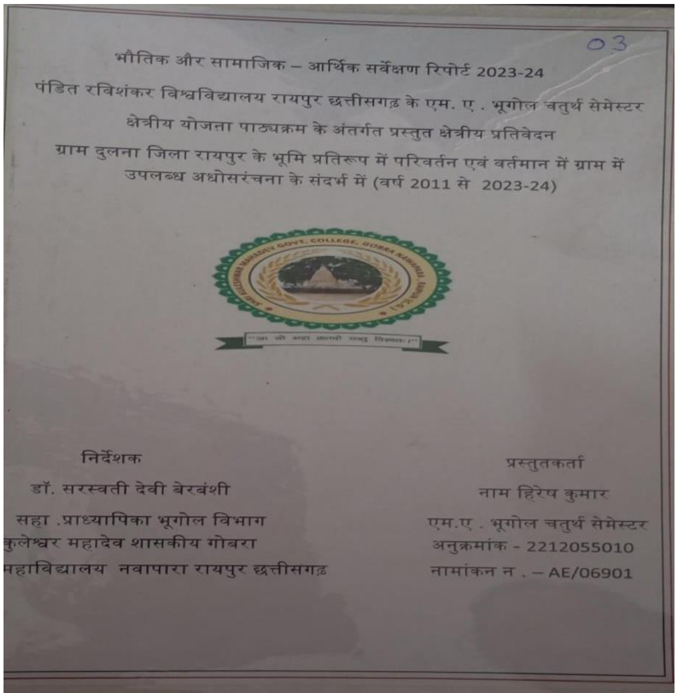

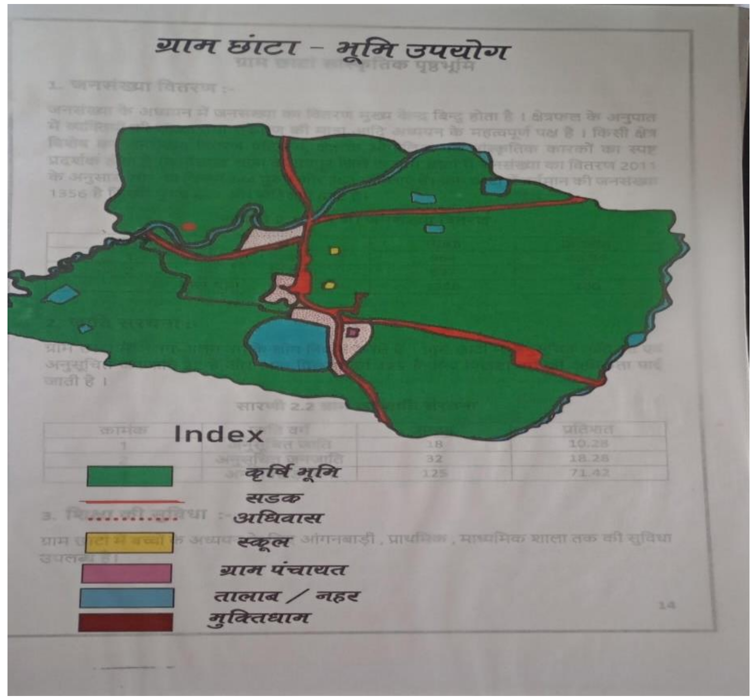

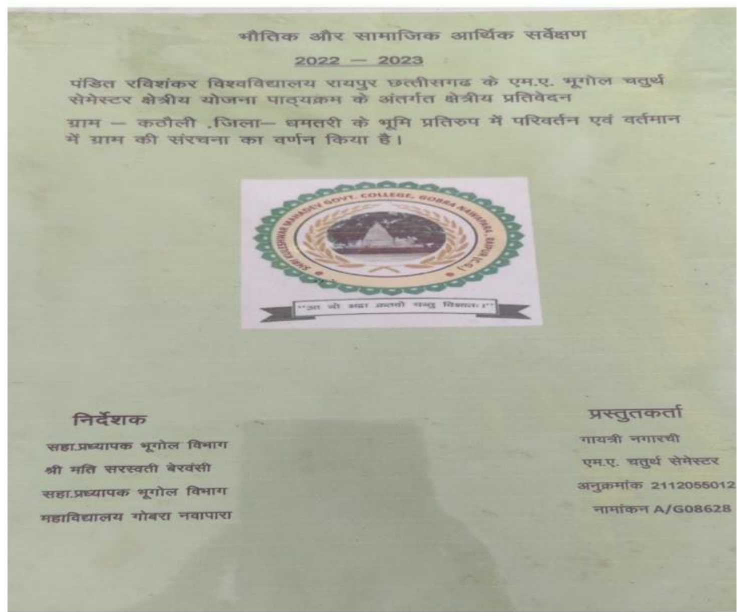

विकास कार्यक्रम हेतु चर्चा

इस कार्यक्रम के दौरान, गांव के नेताओं, प्रगतिशील किसानों और खेतिहर महिलाओं के साथ समूह चर्चा और बातचीत की गई। ग्रामीणों के साथ भ्रमण के माध्यम से गांव के संसाधनों का भी मूल्यांकन किया गया। दोनों यात्राओं के दौरान, किसानों को जैविक फसलों और पशुधन संसाधनों एवं मानव स्वास्थ्य से संबंधित में आवश्यक जानकारी, ज्ञान और सलाह भी दी गई।